राष्ट्रीय एकात्मता के खतरे

भारत प्राचीनकाल से ही राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टियों से एकात्मता के अखण्ड और सुदृढ़ सूत्र में आबद्ध रहा है। समय चाहे वैदिककाल का रहा हो या उत्तर वैदिककाल का, रामायणकाल का रहा हो या महाभारत काल का, मौर्यकाल का हो या गुप्तकाल का, भारतीय वाड्मय. चाहे ऋग्वेद हो या अथर्ववेद, पुराण हो या शास्त्र, रामायण हो या महाभारत इन सभी में स्थानस्थान - पर ऐसे अनेक उल्लेख मिलते हैं जो इसकी प्राचीनता और एकात्मता की पुष्टि करते हैं। जिस राष्ट्र ने सदैव एक मजबूत और अखण्ड इकाई के रूप में अपनी पहचान को स्थापित किया हो उसे संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के लिए क्षेत्रीय आधार पर बाँटना किसी राष्ट्रद्रोही षड्यंत्र से कम नहीं। इस षड्यंत्र में इस देश के तथाकथित छद्म धर्मनिरपेक्षतावादी तो पहले से साझीदार थे ही परन्तु कुछ कथित राष्ट्रवादी भी आज इसमें शामिल होकर अपने असली चरित्र को ही प्रदर्शित कर रहे हैं। ऋग्वेद में इस देश की सीमाएँ हिमालय से समुद्र पर्यन्त इस रूप से चिन्हित की गयी हैं-

यस्य इमे हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

यस्येमे प्रदिशस्य बाहु, कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

विष्णु पुराण के अनुसार 'पृथ्वी का वह भाग जो समुद्र के उत्तर तथा पर्वतराज हिमालय के दक्षिण में स्थित है और जहाँ भारतीय सन्ततियाँ निवास करती हैं, वही भारतवर्ष है।' बार्हस्पतशास्त्रम् के अनुसार 'पर्वतराज हिमालय से प्रारम्भ होकर समुद्र पर्यन्त विस्तृत देवताओं द्वारा निर्मित देश हिन्दुस्थान है।' यही नहीं इस देश का मूल निवासी चाहे कश्मीर का हो अथवा कन्याकुमारी का, द्वारका का हो या कामाख्या का, हर दिन स्नान करते समय ''गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे, सिन्धु, कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिम् कुरु।'' कह कर देश की सभी पवित्र नदियों का आह्वान करते हुए सम्पूर्ण देश की एकात्मता की साक्षात्

अनुभूति आज भी करता है। लेकिन ब्रिटिश सत्ता और वामपंथियों ने कभी भी भारत को एक राष्ट्र नहीं माना। इसके पीछे उनके निहित स्वार्थ थे। ब्रिटिश सत्ता ने भारत में जो शिक्षा व्यवस्था लागू की उसमें भी यही सिखाया गया कि भारत में अनेक संस्कृतियाँ हैं और मोटे तौर पर इस भूगाग में दो विशेष संस्कृतियाँ हैं जिन्हें हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति कहकर सम्बोधित किया जा सकता है। भारत ने स्वतंत्रता की लड़ाई द्विराष्ट्रवाद के विरुद्ध लड़ी थी परन्तु अंग्रेजों की कुटिलता, वामपंथियों के दुष्प्रचार तथा मुस्लिम लीग जैसे संगठनों के कारण अधिकांश मुस्लिम कभी भारत को एक सांस्कृतिक इकाई नहीं स्वीकार कर पाये जिसका परिणाम अन्ततः सन् में देश के दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के रूप में हमें 1947 देखना पड़ा। आज उसी पृथकतावादी सोच को कई अर्थों में भारत की राजनीति प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही है। जहाँ आज भी भारत के अधिकांश राजनीतिज्ञ भारत को एक सांस्कृतिक इकाई मानने के बजाय मिलीजुली संस्कृति का राष्ट्र मानते हैं, वहीं अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के लिए राष्ट्र को जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद के रूप में बाँटने में भी वे कोई संकोच नहीं कर रहे हैं। भारत में वृहद् हिन्दू समाज का इस रूप में बँटा होना भी आतंकवादअलगाववाद के पनपने का - पसीना बहाकर -कारण बना है। जिन उत्तर भारतीय नागरिकों ने अपना खून असम के नवनिर्माण तथा मुम्बई को इस देश की आर्थिक राजधानी के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दिया था, आज उन पर हिन्दी भाषी अथवा उत्तर भारतीय होने के नाम पर किया जा रहा अत्याचार सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए न केवल चिन्ता का विषय है अपितु इस प्रकार की प्रवृत्ति राष्ट्रीय एकात्मता को भी कमजोर करने वाली है। असम में पिछले कई वर्षों से उल्फा द्वारा हिन्दी भाषी क्षेत्र के नागरिकों पर ढाये गये अत्याचार के बाद महाराष्ट्र के अन्दर भी उसका वीभत्स स्वरूप देखने को मिल रहा है। इसके पीछे इस देश की तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी ताकतें सक्रिय हैं। यह मात्र एक राजनीतिक घटनाक्रम नहीं है। इसे जैसे भी हो, सख्ती के साथ कुचलने की आवश्यकता है। आखिर कोई व्यक्ति

अथवा संगठन राष्ट्र से बढ़कर नहीं हो सकता। अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के लिए राष्ट्र को क्षेत्रीयता के आधार पर बाँटकर अलगाववादी गतिविधियों को बढ़ाना अत्यन्त ही निन्दनीय एवं राजनीति के घटिया स्तर को प्रदर्शित करता है। यह राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए अत्यंत ही खतरनाक स्थिति है। इसके पीछे वे ही लोग हैं जो आतंकवाद के मुद्दे पर मौन हैं। बांग्लादेशी घुसपैठियों को वापस भेजने के मुद्दे पर जो लोग मानवाधिकार की दुहाई देते हैं, वे ही लोग असम से उत्तर भारतीय नागरिकों को निकालने अथवा महाराष्ट्र से उत्तर भारतीय नागरिकों के खिलाफ अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। जिन्हें भारत के इतिहास और भूगोल की जानकारी नहीं वे लोग आज क्षेत्रवाद जैसे संकीर्ण मुद्दों को उठाकर राष्ट्र को अलगाववाद की आग में झोंकने का प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान में महाराष्ट्र एवं असम की घटनाएँ इस घटिया राजनीति के नमूने हैं जो हमारा ध्यान इस ओर बरबस आकर्षित करते हैं कि कुछ लोगों के लिए राजनीति राष्ट्र से बढ़कर हो गई है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राजनीति राष्ट्र के लिए है न कि राष्ट्र राजनीति के लिए। महाराष्ट्र की घटनाएँ तो यही प्रदर्शित करती हैं कि-:

जब नाश मनुज का आता है, पहले विवेक मर जाता है।।